दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17-HL-**HL8**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): Ratan Deep Gupta

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.): ____________________

ई-मेल पता (E-mail address): ____________________

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): ____________________

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]:

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): ____________________

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:

*There are **Five** questions.*

*Candidate has to attempt all **FIVE** questions.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answers must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Word limit in questions, if specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum- Answer book must be clearly struck off.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly.

बहुत अच्छा

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 149 टिप्पणी (Remarks): ____________________

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजियेः $10 \times 5 = 50$

(क) सतगुरु की महिमा अनँत, अनँत किया उपगार।
लोचन अनँत उघारिया, अनँत दिखावनहार।।

संदर्भ एवं प्रसंग

प्रस्तुत काव्यांश भक्तिकाल की संतकाव्य धारा के सशक्त हस्ताक्षर 'कबीर' द्वारा लिखित एवं आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा संकलित कबीर ग्रंथावली से उद्धृत है। इसका संकलन 'गुरुदेव को अंग' शीर्षक के अन्तर्गत किया गया है।

कबीर अपने गुरु के प्रति अनन्य भक्तिभाव रखते हैं। प्रस्तुत काव्यांश में गुरु की कृपा से कबीर को ज्ञान होने की स्थिति को स्वीकारा गया है।

व्याख्या :-

कबीर दास जी कहते हैं कि मेरे सतगुरु ने मुझ पर अनेकों उपकार किये हैं, उनकी महिमा का बखान कैसे करूँ? उन्हीं की कृपा

अनेक (बहुवचन है)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

का परिणाम है जो मुझे अन्तर्दृष्टि प्राप्त हुई है और अनन्त ब्रह्म का ज्ञान प्राप्त हो गया है।

काव्य-सौन्दर्य :-

⇒ कबीर की गुरु के प्रति अनन्य एवं एकनिष्ठ भक्ति भावना व्यंजित हुई है।

⇒ कबीर की भाषा सधुक्कड़ी किंतु भावबोधक है।

⇒ अनुप्रास एवं उपमा अलंकार की छटा बिखेरी गयी है।

⇒ कबीर दास जी ने अन्यत्र भी गुरु गोविन्द दोऊ खड़े के माध्यम से गुरु को ईश्वर से श्रेष्ठ बताया है।

⇒ प्रासंगिकता :-

वर्तमान समय में ढोंगी गुरुओं यथा राम-रहीम, आसाराम द्वारा लोगों को बेवकूफ बनाया जा रहा है। ऐसे में सच्चे पथप्रदर्शक गुरु की महत्ता बढ़ती ही जा रही है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) काहे को रोकत मारग सूधो?
सुनहु मधुप! निर्गुन-कंटक तें राजपंथ क्यो रुँधो?
कै तुम सिखै पठाए कुब्जा, कै कही स्यामघन जू धौं।
बेद पुरान स्मृति सब ढूँढ़ौ, जुवतिन जोग कहू धौं?
ताको कहा परेखो कीजै जानत छाछ न दूधो।
सूर मूर अक्रूर गए लै ब्याज निबेरत उधो।।

संदर्भ एवं प्रसंग

प्रस्तुत काव्यांश भक्तिकालीन सगुणधारा के सशक्त हस्ताक्षर सूरदास द्वारा लिखित एवं श्याम सुन्दर दास द्वारा संकलित 'भ्रमरगीतसार' से लिया गया है।

उद्धव द्वारा गोपियों को निर्गुणब्रह्म एवं योग की शिक्षा देने पर उपालम्भ एवं प्रतिकार करते हुए गोपियों द्वारा यह पंक्तियाँ कही जा रही हैं।

व्याख्या =>

गोपियाँ उद्धव से कह रही हैं कि हे उद्धव! आप हमारे प्रेमरूपी मार्ग को निर्गुण ब्रह्म रूपी कांटे से क्यों युक्त कर रहे हैं? हे भँवरे (उद्धव)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तुमको या तो श्री कृष्ण या फिर कुब्जा ने सिखा-पढ़ाकर यहाँ भेजा है।

वेद, पुराण, स्मृतियाँ इन सब का पठन-पाठन भला युवतियों के लिए है क्या? गोपियाँ अपनी वाक्विदग्धता के चरम पर पहुँचते हुए धाद एवं दूध के भेद का उदाहरण देती हैं और कहती हैं कि अक्रूर तो मूल (श्री कृष्ण एवं बलराम) को ले गये अब आप ब्याज लेने आये हैं?

काव्य-सौन्दर्य :-

=) गोपियों की वाक्विदग्धता को सुंदर उपालम्भ काव्य में बदलना सूर के बस की ही बात है।

=) ब्याज एवं मूलधन जैसे प्रयोगों से सूर के लोकजीवन एवं कृषक व्यवस्था के प्रतीकों को शामिल किया गया है।

=) भाषा माधुर्यपूर्ण ब्रजभाषा है।

=) रूपक एवं श्लेष अलंकारों की छटा है।

=) आचार्य शुक्ल ने सूर के उपालम्भ काव्य को सर्वोत्तम बताया है।

अच्छा

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात।
भरै भौन में करत हैं, नैननु ही सों बात।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

संदर्भ एवं प्रसंग :-

प्रस्तुत काव्यांश रीतिकालीन शृंगार रस के प्रसिद्ध कवि 'बिहारीलाल' की एकमात्र रचना बिहारी सतसई से लिया गया है।

इन पंक्तियों में नायक एवं नायिका द्वारा आँखों की भाषा से भरे हुए भवन में बात करने का मनोहर एवं चित्ताकर्षक वर्णन बिहारी ने किया है।

व्याख्या :-

नायक एवं नायिका एक भरे हुए भवन में बैठे हैं, दोनों लोक-लाज के डर से एक-दूसरे से बात नहीं कर पा रहे हैं। तभी नायक आँखों से कुछ इशारा (कहत) करता है। परन्तु नायिका मना कर (नटत) देती है।

नायिका के इस प्रकार मना करने पर नायक नायिका पर रीझ (रीझत) जाता है और यह देखकर नायिका को खीझ (खिझत) आती है। पुनः

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नायक एवं नायिका के नैन मिलते (मिलत) हैं। दोनों खिलखिलाकर हँस पड़ते (खिलत) हैं और नायिका शर्म से सिर झुका (लजियात) लेती है।

इस प्रकार सभी के बीचों-बीच दोनों प्रेमी आँखों की भाषा से ही बातें कर रहे हैं।

काव्य-सौन्दर्य :-

1. बिहारी शृंगार रस के प्रसिद्ध कवि हैं। प्रस्तुत काव्य में सात शब्दों से सात क्रियाएं कराना बिहारी के काव्य की उत्कृष्टता को प्रकट करता है।
2. भाषा की समाहार क्षमता, सटीक शब्दचयन बिम्बों की शृंखला का निर्माण एक चलचित्र देखने का अनुभव भावक को देता है।
3. भाषा माधुर्यपूर्ण ब्रजभाषा है।
4. अनुप्रास अलंकार की छटा उत्पन्न है।
5. बिहारी की अनुभाव योजना सम्पूर्ण रीतिकाल में में सर्वोत्तम है।

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) भू-लोक का गौरव, प्रकृति का पुण्य लीला-स्थल कहाँ?
फैला मनोहर गिरि हिमालय और गंगाजल जहाँ।
सम्पूर्ण देशों से अधिक किस देश का उत्कर्ष है?
उसका कि जो ऋषिभूमि है, वह कौन? भारतवर्ष है।।

संदर्भ एवं प्रसंग

प्रस्तुत काव्यांश द्विवेदीयुगीन नवजागरणकालीन कवि मैथिलीशरण गुप्त द्वारा लिखित प्रसिद्ध रचना 'भारत-भारती' से उद्धृत है। यह अंश रचना के अतीत खण्ड से लिया गया है।

इन पंक्तियों में गुप्त जी ने अपनी राष्ट्रीय सांस्कृतिक विचारधारा के अनुरूप अतीतकाल में भारत के विस्तार एवं विकास का वर्णन किया है।

व्याख्या :-

गुप्तजी भारतवर्ष का गुणगान करते हुए कहते है कि यह इस पृथ्वी का गौरव है। यहाँ प्रकृति स्वयं लीला करती है जो हिमालय के सुंदर एवं मनोरम रूप एवं पावन गंगाजल के रूप में प्रतिबिम्बित हो रहा है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

यह वही भूमि है जो ऋषि, मुनियों का केन्द्र रही है और जिसने विश्व को अपने ज्ञान-विज्ञान के विकास से नया मार्ग दिखाया है।

काव्य सौन्दर्य :-

(1) इन पंक्तियों में गुप्तजी के भारतवर्ष से प्रेम एवं अतीत से मोहग्रस्तता की दृष्टि व्यंजित हुई है।

(2) स्वतन्त्रताकाल के दौरान लिखी यह रचना (1912) देशवासियों में स्वाभिमान के जागरण की दृष्टि से महत्वपूर्ण रही है।

(3) भाषा में अभिधात्मकता का गुण देखा जा सकता है, परन्तु प्रवाह आकर्षक है।

(4) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने भी "सबके पहिले जेहि ईश्वर धन बल दीन्हो" के माध्यम से ऐसे ही विचार व्यक्त किये हैं।

(5) प्रासंगिकता :- भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठता एवं पश्चिम के मिथ्याभिमान को तोड़ने की दृष्टि से ये पंक्तियाँ सदैव प्रासंगिक रहेंगी।

6/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) है अमानिशा, उगलता गगन घन अंधकार
खो रहा दिशा का ज्ञान, स्तब्ध है पवन चार,
अप्रतिहत गरज रहा पीछे अम्बुधि विशाल
भू-धर ज्यों ध्यान-मग्न, केवल जलती मशाल।

संदर्भ एवं प्रसंग :-

प्रस्तुत पंक्तियाँ छायावाद के प्रमुख स्तम्भ महाप्राण सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला द्वारा लिखित प्रसिद्ध लम्बी कविता राम की शक्तिपूजा से उद्धृत हैं।

इन पंक्तियों में निराला द्वारा प्रथम दिन के युद्ध के बाद राम के शिविर की परिस्थितियों का वर्णन कर रहे हैं।

व्याख्या :-

निराला कहते हैं कि अमावस्या की रात है, और इतना अंधकार है कि मानो अम्बर स्वयं अंधकार उगल रहा है, दिशाएँ भी अंधकार के कारण नहीं सूझ रही हैं। पवन भी बिल्कुल शांत है।

विशाल सागर निरंतर गरज रहा है, पहाड़ भी

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस प्रकार खड़ा है मानो ध्यान-मग्न हो, इन सब परिस्थितियों में केवल एक मशाल ही रोशनी का स्रोत है।

काव्य सौन्दर्य :-

1. निराला द्वारा अंधेरे की भीषणता को एक मशाल की रोशनी के माध्यम से सत्य-असत्य के निरन्तर संघर्ष को व्यंजित किया है।
2. यह संघर्ष वस्तुतः राम-रावण के साथ-साथ भारत के स्वतन्त्रता संघर्ष एवं निराला के स्वयं के जीवन का भी है।
3. भाषा तत्समयुक्त है, मशाल जैसे फारसी शब्द भी उपस्थित हैं।
4. विराट बिम्बों की कुशल उपस्थिति है।
5. प्रासंगिकता :-

सत्य-असत्य का द्वन्द शाश्वत एवं वैश्विक है। सत्य का संघर्ष सदैव प्रेरणादायी होता है।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

2. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिये: 10 × 5 = 50

(क) पीछै लागा जाई था, लोक वेद के साथि,
आगे तैं सतगुर मिल्या, दीपक दीया हाथि।।

संदर्भ एवं प्रसंग।

प्रस्तुत पंक्तियाँ भक्तिकाल की संतधारा के सशक्त हस्ताक्षर कबीर द्वारा लिखित (एवं आचार्य शुक्ल ~~श्याम सुंदर दास~~ द्वारा संकलित गुरुदेव को अंग) कबीर-ग्रंथावली से लिया ली गयी है।

इन पंक्तियों में कबीर ने गुरु की कृपा के माध्यम से सत्य के मार्ग पर बढ़ने का वर्णन किया है।

व्याख्या :-

कबीर दास जी कहते हैं कि वे वेदों एवं कर्मकाण्डों में आज तक लगे हुए थे। वे धन्य हैं कि उन्हें सद्गुरु की कृपा मिली और उन्होंने ज्ञान रूपी दीपक देकर कबीरदास जी को सत्य का मार्ग दिखाया।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

काव्य सौन्दर्य :-

(1) सत्य के मार्ग के लिए सद्गुरु की महत्ता व्यंजित की गई है।

(2) अन्यत्र भी कबीर ने सतगुरु की महिमा अनन्त के माध्यम से यही भाव व्यक्त किया है।

(3) भाषा - सधुक्कड़ी

(3) अलंकार रूपक - 'दीपक दीया'

(4) प्रासंगिकता :-

सच्चे गुरु की महत्ता भी आज के भौतिकवादी युग में और बढ़ गई है। अतः पंक्तियाँ सदैव प्रासंगिक बनी रहेंगी।

6/10 अच्छा

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question - number in this space)

(ख) चढ़ा असाढ़ गँगन घन गाजा। साजा बिरह दुंद दल बाजा।
धूम स्याम धौरे घन धाए। सेत धुजा बगु पाँति देखाए।
खरग बीज चमकै चहुँ ओरा। बुंद बान बरिसै घन घोरा।
अद्रा लाग बीज भुइँ लेई। मोहि पिय बिनु को आदर देई।

संदर्भ एवं प्रसंग :-

प्रस्तुत पंक्तियाँ भक्तिकालीन सूफी काव्यधारा के शिरमौर मलिक मुहम्मद जायसी द्वारा रचित पद्मावत के नागमती वियोग खण्ड से ली गयी हैं।

नागमती का पति रत्नसेन, पद्मावती की खोज में सिंहलद्वीप चला गया है। नागमती उसके वियोग में दुखी है।

व्याख्या :-

नागमती अपने वियोग में दुखी है। आसमान में आषाढ़ के काले बादल घिर आये हैं, मानों विरह ने मिलकर एक सेना बना ली है।

काले, भूरे बादल उमड़-घुमड़ रहे हैं, उनके बीच उड़ते हुए बगुले सफेद ध्वजा की भाँति

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

लगा रहे हैं। चारों ओर बुवाई शुरू हो गई है और बादलों द्वारा बूँदों के बाण चलाये जा रहे है।

वर्षा ऋतु में खेतों में भी कार्य शुरू हो गया है। इन सब के बीच नागमती का कोई आदर नही है वह अपनी विरह पीड़ा को कैसे शांत करे, समझ नहीं पा रही है।

काव्य सौन्दर्य :-

(1) षट्ऋतुवर्णन की काव्य रूढ़ि का सुंदर प्रयोग

(2) नागमती के विरह की मार्मिकता दर्शायी गयी है, आचार्य शुक्ल इसे हिंदी साहित्य की अद्वितीय वस्तु कहते हैं।

(3) भाषा माधुर्य पूर्ण ब्रजभाषा

(4) अलंकार – उपमा, रूपक, अनुप्रास

(5) प्रकृति का सुंदर प्रयोग हुआ है।

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) जिसे तुम समझे हो अभिशाप, जगत की ज्वालाओं का मूल-
ईश का वह रहस्य वरदान, कभी मत इसको जाओ भूल।
विषमता की पीड़ा से व्यस्त हो रहा स्पंदित विश्व महान,
यही दुख-सुख, विकास का सत्य यही भूमा का मधुमय दान।

संदर्भ एवं प्रसंग :-

प्रस्तुत काव्यांश छायावाद के प्रमुख स्तम्भ जयशंकर प्रसाद द्वारा लिखित कामायनी के श्रद्धा सर्ग से लिया गया है।

प्रलय की विनाशलीला से अवसाद, चिंता एवं निराशा में, घिरे मनु को श्रद्धा प्रकृति की निरन्तरता का रहस्य समझा रही है।

व्याख्या :-

श्रद्धा मनु से कहती है कि तुम जिस घटना को अभिशाप मान रहे हो, वह वस्तुतः जगत की निरन्तरता का क्रम है।

विषमता की उपस्थिति के कारण ही यह विश्व आगे बढ़ रहा है। सुख-दुख तो जीवन

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के ही दो रूप हैं।

यही उस आदिशक्ति का वरदान है एवं इसी के अवदान से संसार की शाश्वतता बनी हुई है।

काव्य सौन्दर्य :-

(1) संसार की शाश्वतता एवं सकारात्मकता का विचार प्रसाद प्रस्तुत करते हैं।

(2) भाषा तत्समयुक्त तथा प्रवाहपूर्ण है।

(3) अलंकार - उपमा

(4) प्रसाद द्वारा निरन्तरता का यह संदेश स्कन्दगुप्त नाटक में ही प्रक्षेपित हुआ है

(5) ~~[illegible]~~ :-
प्रसाद की यह पंक्तियाँ किसी शायर की हादसों की जद पे हैं, तो मुस्कुराना छोड़ दें जलजलों के खौफ से क्या घर बनाना छोड़ दें उपरोक्त पंक्तियों से साम्य रखती हैं।

6/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) हरि हैं राजनीति पढ़ि आए।
समुझी बात कहत मधुकर जो? समाचार कछु पाए?
इक अति चतुर हुते पहिले ही, अरु करि नेह दिखाए।
जानी बुद्धि बड़ी, जुवतिन को जोग-सँदेस पठाए।।
भले लोग आगे के, सखि री ! परहित डोलत धाए।
वे अपने मन केरि पाइए जे हैं चलत चुराए।।
ते क्यों नीति करत आपुन जे औरनि रीति छुड़ाए?
राजधर्म सब भए सूर जहँ प्रजा न जायँ सताए।।

संदर्भ एवं प्रसंग :-

प्रस्तुत काव्यांश भक्तिकालीन कृष्णकाव्यधारा के सिरमौर सूरदास द्वारा रचित एवं प्रकाशक सुन्दरदास द्वारा संकलित भ्रमरगीतसार से उद्धृत है।

इन पंक्तियों में उद्धव द्वारा बार-बार निर्गुण ब्रह्म एवं योग से खीझी हुई गोपियों द्वारा श्री कृष्ण को उलाहना दी जा रही है।

व्याख्या =>

गोपियाँ (श्री कृष्ण से उलाहना करते हुए) उद्धव से कहती हैं कि वे (श्री कृष्ण) अब राजनीति पढ़ चुके हैं। वे चतुर तो पहले से ही थे

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

और अब ज्ञान उद्धव का संदेश भिजवाते हुए युवतियों को योग का संदेश भेजा है।

अच्छे लोग तो वो होते हैं जो परहित के लिए कार्य करें, परन्तु यह किस प्रकार की नीति वे (श्री कृष्ण) कर रहे हैं कि वे दूसरों (गोपियों) की रीति (प्रेम का मार्ग) छुड़ाना चाहते हैं।

क्या वे राजधर्म भी भूल गये हैं कि राजा का धर्म प्रजा को सताना नहीं होता है।

काव्यसौन्दर्य

(1) गोपियों की वाग्विदग्धता का वर्णन हुआ है।
(2) सूर ने राजनीति एवं राजधर्म को भी अपने काव्य में समाहित कर अपनी समग्रता का परिचय दिया है।
(3) भाषा – माधुर्यपूर्ण ब्रजभाषा
(4) अलंकार – उपमा, अनुप्रास
(5) सुंदर उपालम्भ काव्य का सृजन

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) शत घूर्णावर्त, तरंग- भंग उठते पहाड़,
जल राशि-राशि जल पर चढ़ता खाता पछाड़,
तोड़ता बन्ध-प्रतिसंध धरा, हो स्फीत-वक्ष
दिग्विजय-अर्थ प्रतिपल समर्थ बढ़ता समक्ष।

संदर्भ एवं प्रसंग :-

प्रस्तुत पंक्तियाँ छायावाद के प्रमुख स्तम्भ महाप्राण निराला द्वारा लिखित लम्बी कविता 'राम की शक्ति पूजा' से उद्धृत है।

राम द्वारा आँखों से दो बूँद गिराये जाते हैं। उनके पास बैठे हनुमान पहले तो प्रसन्न होकर कल्पनाएँ करते हैं, परन्तु वास्तविकता का ज्ञान होने पर क्रोध से भर जाते हैं।

व्याख्या :-

हनुमान के हृदय में भावों का वेग उसी प्रकार उमड़ रहा है जैसे कि समुद्र में चारों ओर से प्रलयकारी लहरें उठ रही हों।

लहरें उठ-उठ कर एक-दूसरे पर गिर रही हैं। समुद्र निरन्तर अपनी सीमा का

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

विस्तार करता हुआ मानो सम्पूर्ण पृथ्वी को समाहित कर लेना चाह रहा हो।

हनुमान भी इसी प्रकार क्रोध से पूर्ण होकर प्रलयकारी रूप धारण कर रहे हैं।

काव्यसौन्दर्य! -

=> निराला ने इन पंक्तियों में आत्मशक्ति की विशालता को हनुमान के माध्यम से दर्शाया है।

=> भाषा तत्समयुक्त एवं प्रसंगानुकूल

=> विराट बिम्बों की सर्जना

=> भाषा की अद्भुत समाहार क्षमता

=> स्वतन्त्रता आंदोलन में हनुमान अर्थात जनता की शक्ति की व्यंजना भी इन पंक्तियों में हुई है।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number. in this space)

3. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिये: 10 × 5 = 50

(क) नैना नीझर लाइया, रहट बहै निस जाम।
पपीहा ज्यूँ पिव पिव करौं, कब रु मिलहुगे राम।।

संदर्भ एवं प्रसंग

प्रस्तुत काव्यांश भक्तिकालीन संतकाव्य धारा के सिरमौर कबीर द्वारा रचित एवं ~~श्यामसुंदर~~ आचार्य शुक्ल दास द्वारा संकलित कबीर ग्रंथावली से लिया गया है। यह विरह को अंग शीर्षक के अन्तर्गत संकलित है।

कबीर द्वारा विरहिणी की कातर दशा एवं प्रभु प्रेम की आस को व्यक्त किया गया है।

व्याख्या =)

कबीर दास जी कहते हैं कि एक विरहिणी की भाँति उनकी आँखों से रहट (पानी, कुएँ से निकालने का यंत्र) की भाँति जल (आँसू) निकलता रहता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

यह विरहिणी हृदय पपीहे की भाँति रुदन कर रहा है, परन्तु श्री राम (निर्गुण ब्रह्म) के दर्शन न जाने कब होंगे?

काव्य सौन्दर्य :-

=> विरह की मार्मिकता का सुंदर वर्णन
=> कबीर की विरह वेदना उनके काव्य के सर्वोत्तम अंशों में से है।
=> भाषा - सधुक्कड़ी
=> अलंकार - उपमा, अनुप्रास
=> कबीर के राम निर्गुण राम हैं जिन्हें वह मैं तो कूता राम का कह भी व्यक्त करते हैं।

अच्छा

6/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) न्यायोचित सुख सुलभ नहीं
जब तक मानव-मानव को,
चैन कहाँ धरती पर, तब तक
शान्ति कहाँ इस भव को?
"जब तक मनुज-मनुज का यह
सुख-भाग नहीं सम होगा,
शमित न होगा कोलाहल,
संघर्ष नहीं कम होगा।

संदर्भ एवं प्रसंग

प्रस्तुत पंक्तियाँ राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर द्वारा लिखित लम्बी कविता कुरुक्षेत्र से ली गयी है।

इन पंक्तियों में शरशैय्या पर लेटे भीष्म द्वारा युधिष्ठिर को सामाजिक न्याय एवं असमानता के कारणों को समझाया जा रहा है।

व्याख्या :)

भीष्म कहते हैं कि जब तक प्रत्येक मानव को न्याय से युक्त सुख उपलब्ध नहीं होगा, इस पृथ्वी पर शांति की स्थापना नहीं हो

Copyright – Drishti The Vision Foundation

सकती है।

प्रत्येक मनुष्य को सामाजिक न्याय मिलना चाहिए यही पृथ्वी पर शांति का मार्ग है।

काव्य सौन्दर्य

=) दिनकर की इन पंक्तियों पर मार्क्सवाद का प्रभाव है।

=) सामाजिक न्याय की अवधारणा शांति स्थापना की दृष्टि से श्रेयस्कर है।

=) भाषा तद्भवयुक्त एवं प्रभावपूर्ण है।

=) दिनकर ने अन्यत्र भी लिखा है—
श्वान को मिलता दूध वस्त्र भूखे बालक अकुलाते हैं।
यहाँ भी सामाजिक न्याय की अवधारणा प्रबल है।

6½
10

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) बिलग जनि मानहु, ऊधो प्यारे!
वह मथुरा काजर की कोठरि जे आवहिं ते कारे।।
तुम कारे, सुफलकसुत कारे, कारे मधुप भँवारे।
तिनके संग अधिक छबि उपजत, कमलनैन मनिआरे।।
मानहु नील माट तें काढ़े लै जमुना ज्यों पखारे।
ता गुन स्याम भई कालिंदी सूर स्याम गुन न्यारे।।

संदर्भ एवं प्रसंग

प्रस्तुत पंक्तियाँ भक्तिकालीन कृष्णकाव्यधारा के सिरमौर कवि सूरदास द्वारा रचित एवं श्याम सुन्दर दास द्वारा संकलित भ्रमरगीत सार से उद्धृत हैं।

इन पंक्तियों में गोपियाँ उद्धव से अपनी तिक्तता व्यक्त करते हुए मथुरा, श्रीकृष्ण, सभी को उलाहना दे रही हैं।

व्याख्या

गोपियाँ उद्धव से कहती हैं कि उद्धव जी आप हमारी बातों का बुरा न मानें, परन्तु वह मथुरा तो काजल की कोठरी है वहाँ से जो भी आता है सब काले (कपटी मनवाले) ही हैं।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उद्धव जी आप स्वयं, अक्रूर, सभी इसी प्रकार के हैं। इन सभी काले मन वाले लोगों में तो कृष्ण मणिधारी नाग की भाँति सुशोभित हो रहे हैं (व्यंग्य)।

ऐसा लगता है कि मानो नील की मटकी को ही यमुना में घुल दिया गया है जिससे पूरी यमुना ही काली पड़ गई है, ऐसे कमलनयन की महिमा निराली है।

काव्य सौन्दर्य ⇒

⇒ गोपियों की वाक्चतुरता एवं उपालम्भ काव्य का मनोहारी चित्रण है।

⇒ सूर की कल्पनाशीलता अनुपम है।

⇒ भाषा - माधुर्यपूर्ण ब्रजभाषा

⇒ अलंकार = उपमा, रूपक, अनुप्रास

⇒ श्रृंगार रस की अद्भुत छटा

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) जौ रोऊं तौ बल घटै, हँसौं तौ राम रिसाइ।
मनंही माँहि बिसूरणां, ज्यूँ घुँण काठहि खाइ।।

संदर्भ एवं प्रसंग =>

प्रस्तुत पंक्तियाँ भक्तिकालीन संतकाव्यधारा के प्रमुख कवि कबीर द्वारा रचित कबीर ग्रंथावली से ली गयी हैं।

इन पंक्तियों में कबीर द्वारा प्रभु प्रेम के मार्ग में आने वाली बाधाओं एवं उनके स्वयं के अंतर्द्वन्द्व का चित्रण किया गया है।

व्याख्या =>

कबीरदास जी कहते हैं कि यदि प्रभुप्रेम में आँसू बहाते हैं तो शरीर कमजोर होता है, यदि संसार की भाँति सुखपूर्वक हँसते हैं तो राम के विकरण का डर है।

ऐसी अंतर्द्वन्द्व की स्थिति में वे मन ही

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मन दुःखी है, मात्रों लकड़ी को घुन अन्दर ही अन्दर खोखला कर रहा है।

काव्य-सौन्दर्य :-

=> कबीर की विरहवाणी का सुन्दर प्रक्षेपण

=> भाषा - सधुक्कड़ी

=> लोक जीवन की लोकोक्ति - घुंण काठहि का सुंदर प्रयोग

=> तलफै बिनु बालम मोर जिया के माध्यम से अन्यत्र भी कबीर यह विरह वाणी प्रदर्शित करते हैं।

5 1/2
10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) श्रेय नहीं कुछ मेरा,
मैं तो डूब गया था स्वयं शून्य में–
वीणा के माध्यम से अपने को मैंने,
सब-कुछ को सौंप दिया था–
सुना आप ने जो वह मेरा नहीं,
न वीणा का था:
वह तो सब-कुछ की तथता थी
महाशून्य
वह महामौन
अविभाज्य, अनाप्त, अद्रवित, अप्रमेय
जो शब्दहीन
सब में गाता है।

संदर्भ एवं प्रसंग =>

प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रयोगवाद एवं नयी कविता आन्दोलनों के प्रस्तावक कवि अज्ञेय द्वारा रचित लम्बी कविता असाध्यवीणा से ली / लिया गयी हैं।

इन पंक्तियों में वीणा को साधने के क्रम में व्यक्तित्व के विलीनीकरण को व्याख्यायित किया गया है।

व्याख्या => प्रियंवद द्वारा वीणा को साधते हुए

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वह स्वयं खो जाता है। वह कहता है कि वह तो स्वयं वीणा में डूब गया था। जो स्वर उत्पन्न हुआ वह न तो वीणा का था, न ही उसका वह तो उस महामौन ब्रह्म का ही स्वर था, जो वस्तुतः सभी ध्वनियों का स्रोत है।

काव्य सौन्दर्य

=) व्यक्ति के विलीनीकरण का प्रभाव इन पंक्तियों पर है।

=) अज्ञेय बौद्धिक एवं इलियट के निर्वैयक्तिकता का भी प्रभाव है।

=) अज्ञेय शब्दों के शिल्पी हैं, अतः भाषा प्रभावपूर्ण है।

=) तुक व लय तो नहीं परन्तु आंतरिक लय विद्यमान है।

=) आर्ट आफ रीडिंग का प्रयोग

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

4. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजिये: 10 × 5 = 50

(क) विपन्नता के इस अथाह सागर में सोहाग ही वह तृण था, जिसे पकड़े हुए वह सागर को पार कर रही थी। इन असंगत शब्दों ने यथार्थ के निकट होने पर भी, मानों झटका देकर उसके हाथ से वह तिनके का सहारा छीन लेना चाहा, बल्कि यथार्थ के निकट होने के कारण ही उनमें इतनी वेदना-शक्ति आ गई थी। काना कहने से काने को जो दुःख होता है, वह क्या दो आँखों वाले आदमी को हो सकता है?

संदर्भ एवं प्रसंग

प्रस्तुत पंक्तियाँ उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द द्वारा लिखित महाकाव्यात्मक उपन्यास गोदान से ली गई है।

इन पंक्तियों में होरी द्वारा साठे पर पाठा कहने तथा साठ के पहले ही चल देंगे जैसी उक्तियों के बाद लेखक के माध्यम से धनिया सोच रही है कि -

व्याख्या =>

अत्यन्त गरीबी एवं दुःखों को झेलकर भी अपने पति के सहारे उसने जीवन आज तक जिया है। परन्तु होरी के शब्दों से जैसे धनिया को झटका लगा हो।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

वह यथार्थ की निकटता से ही दुःखी होने लगी है।

रचनात्मक सौंदर्य :-

=> कृषक जीवन एवं भारतीय नारी की सामाजिक परिस्थितियों का उत्कृष्ट चित्रण

=> शोषण की भारतीय समाज में भूमिका का आकर्षक उदाहरण

=> काना को काना ... जैसे लोकजीवन के तत्वों का सुंदर प्रयोग

=> भाषा- हिन्दुस्तानी एवं प्रवाहपूर्ण

=> संवाद शैली

=> विराम चिन्हों का कुशल प्रयोग

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) मगर कोठरी में बैठने की देर थी कि आँखों से छल-छल आँसू बहने लगे। वह दुपट्टे से बार-बार उन्हें पोंछती, पर वे बार-बार उमड़ आते, जैसे बरसों का बाँध तोड़कर उमड़ आये हों। माँ ने बहुतेरा दिल को समझाया, हाथ जोड़े, भगवान का नाम लिया, बेटे के चिरायु होने की प्रार्थना की, बार-बार आँखें बन्द कीं, मगर आँसू बरसात के पानी की तरह जैसे थमने में ही न आते थे।

संदर्भ एवं प्रसंग

प्रस्तुत पंक्तियाँ एक पुस्तिका समान्तर में संकलित कहानी चीफ की दावत जो कि भीष्म साहनी द्वारा लिखित है, से ली गई हैं।

इन पंक्तियों में एक बूढ़ी माँ एवं उसके पुत्र के चीफ के मध्य फुलकारी बनाने के संवाद एवं माँ द्वारा असमर्थता व्यक्त करने की बाद की परिस्थिति का वर्णन है।

व्याख्या =)

शामनाथ के चीफ द्वारा फुलकारी बनाने की मांग एवं उसकी माँ के द्वारा असमर्थता व्यक्त करने के बावजूद, शामनाथ इसकी जिद करता है।

उसकी माँ बूढ़ी हो चली है, परन्तु शामनाथ

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न सख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तो वह अपने चाचा को खुश करना चाहता है। ऐसे में उसकी माँ अपनी स्वयं की विवशता पर दुःखी हो रही है।

स्चनात्मक सौन्दर्य :-

=> वृद्धजनों की पारिवारिक स्थिति पर तलख टिप्पणी है।

=> भारत की सामाजिक स्थितियों वृद्धजनों की स्थिति को प्रेमचन्द ने बूढ़ी काकी में भी व्यक्त किया है।

=> भाषा प्रभावपूर्ण एवं तद्भव प्रधान है।

=> प्रासंगिकता :-
इन्हीं परिस्थितियों को देखते हुए भारत सरकार द्वारा वृद्धजनों के लिए मेंटिनेंस एक्ट लाया गया है।

अच्छा

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) भविष्य की चिन्ता हमें कायर बना देती है, भूत का भार हमारी कमर तोड़ देता है। हममें जीवन की शक्ति इतनी कम है कि भूत और भविष्य में फैला देने से वह और भी क्षीण हो जाती है। हम व्यर्थ का भार अपने ऊपर लादकर रूढ़ियों और विश्वासों और इतिहासों के मलबे के नीचे दबे पड़े हैं, उठने का नाम ही नहीं लेते, वह सामर्थ्य ही नहीं रही। जो शक्ति, जो स्फूर्ति, मानव-धर्म को पूरा करने में लगनी चाहिये थी, सहयोग में, भाई-चारे में, वह पुरानी अदावतों का बदला लेने और बाप-दादों का ऋण चुकाने की भेंट हो जाती है और यह जो ईश्वर और मोक्ष का चक्कर है, इस पर तो मुझे हंसी आती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ एवं प्रसंग :-

प्रस्तुत पंक्तियाँ उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द द्वारा लिखित महाकाव्यात्मक उपन्यास गोदान से ली गयी हैं।

इन पंक्तियों में गोदान के शहरी पात्र मि. मेहता द्वारा ~~एक~~ ~~अपने~~ अपने विचार व्यक्त किये जा रहे हैं।

व्याख्या =>

मि. मेहता के माध्यम से प्रेमचन्द कहते हैं कि हमें भूत एवं भविष्य की चिंता छोड़कर अपनी शक्तियों को वर्तमान में केन्द्रित करना चाहिए। भूत एवं रूढ़ियाँ हमारी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

शक्ति का अपव्यय ही करती है।

ईश्वर एवं मोक्ष की इन्हीं रूढ़ियों का परिणाम है, हमें अपनी ऊर्जा का सही उपयोग करना चाहिए।

रचनात्मक सौन्दर्य :-

=) प्रेमचन्द की जीवनदृष्टि व्यक्त हुई है।

=) वर्तमान पर और तत्कालीन भारतीय समाज को वर्तमान में अधिक प्रयत्न को प्रेरित करता है।

=) भाषा - हिन्दुस्तानी है।

=) विचारों की संगुम्फित धारा का प्रभाव देखने को मिलता है।

=) संवादशैली का ~~प्रयोग~~

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) धनिया यन्त्र की भांति उठी, आज जो सुतली बेची थी, उसके बीस आने पैसे लायी और पति के ठण्डे हाथ में रखकर सामने खड़े दातादीन से बोली-महराज! घर में न गाय है, न बछिया, न पैसा। यही पैसे हैं, यही इनका गोदान है।

संदर्भ एवं प्रसंग :-

प्रस्तुत पंक्तियाँ उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द द्वारा लिखित महाकाव्यात्मक उपन्यास गोदान से ली गई हैं।

ये पंक्तियाँ उपन्यास के अंतिम पृष्ठ से ली गई हैं। होरी की मृत्यु के बाद की मार्मिक परिस्थिति का वर्णन किया जा रहा है।

व्याख्या =>

होरी की दुःखद मृत्यु के उपरान्त, धनिया यंत्रवत हो जाती है। इस दुःखद घड़ी में भी रूढ़ियाँ एवं गरीबी उस के सिर पर खड़ी हैं।

वह सुतलियों के बेचे जाने से प्राप्त पैसों को दातादीन को देकर गोदान की परम्परा

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

को दिखाती है।

स्वात्मक सौन्दर्य

=> प्रेमचन्द ने होरी की दुःखद मृत्यु को गोदान से जोड़कर अत्यन्त मौलिकता एवं मार्मिकता का परिचय दिया है।

=> वस्तुतः यह भारतीय सामाजिक व्यवस्था पर एक व्यंग्य है।

=> भाषा => हिन्दुस्तानी है।

=> विरामचिह्नों का कुशल प्रयोग हुआ है।

=> प्रासंगिकता =>

आज भी भारतीय कृषक का जीवन अत्यन्त दुःखद है। कृषकों की बढ़ती आत्महत्याएँ इसका प्रमाण है।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) जीना चाहते हो? कठोर पाषाण को भेदकर, पाताल की छाती चीरकर अपना भोग्य संग्रह करो; वायुमंडल को चूसकर, झंझा-तूफान को रगड़कर, अपना प्राप्य वसूल लो; आकाश को चूमकर, अवकाश की लहरों में झूमकर, उल्लास खींच लो।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ एवं प्रसंग :-

प्रस्तुत पंक्तियाँ हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा लिखित प्रसिद्ध ललित निबंध कुटज से ली गई हैं।

इन पंक्तियों में कवि कुटज की विषम परिस्थितियों में जिजीविषा को व्यक्त कर रहा है।

व्याख्या =)

हजारी प्रसाद जी आलंकारिक शैली में कुटज के जीवन की विशेषता को व्यक्त करते हैं। वे कहते हैं कि कुटज का जीवन भी सभी विषम परिस्थितियों के बीच भी जीने की प्रेरणा देता है।

जिस प्रकार कुटज पहाड़ों को भेदकर,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तूफानों से लड़कर, सदैव प्रसन्न रहता है। इसी प्रकार मनुष्य को अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति एवं जिजीविषा को बनाये रखना चाहिए।

स्थापत्यक सौन्दर्य

=> द्विवेदी जी ने प्रभावपूर्ण एवं प्रेरक भाषा में आशावाद का संचार किया है।

=> आत्मव्यंजक शैली के प्रवर्तक होते हैं।

=> भाषा तद्भव एवं तत्सम का मिश्रण है एवं कथ्य को प्रभावी ढंग से व्यक्त करता है।

=> दिनकर भी कहते हैं कि "उसने अपना सुख अपने भुजबल से ही पाया है।

=> प्रासंगिकता => आत्महत्या की बढ़ती घटनाओं की दृष्टि से ये पंक्तियाँ सदैव प्रेरणादायी हैं।

6/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

5. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) तो क्या ये मेरे मोटे होने के दिन हैं? मोटे वह होते हैं जिन्हें न रिन का सोच होता है न इज्जत का। इस जमाने में मोटा होना बेहयाई है। सौ को दुबला करके तब एक मोटा होता है। ऐसे मोटेपन में क्या सुख? सुख तो जब है कि सभी मोटे हों।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

संदर्भ एवं प्रसंग

प्रस्तुत पंक्तियाँ उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद द्वारा लिखित महाकाव्यात्मक उपन्यास गोदान से ली गई हैं।

इन पंक्तियों में होरी-हीरा संवाद है। हीरा के "भैया बहुत दुबले हो गये हो" का उत्तर होरी दे रहा है।

व्याख्या =)

होरी कहता है कि मोटापा वस्तुतः बहुत अच्छी चीज नहीं है। यह तो उन्हें मिलती है जिन्हें जीवन में विषम परिस्थितियाँ नहीं मिलतीं।

वह पुनः कहता है कि दूसरों का हक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दबाकर मोटा होना, सामाजिक अन्याय ही है।

रचनात्मक सौन्दर्य

=> प्रेमचन्द की सामाजिक न्याय की अवधारणा व्यक्त हुई है।

=> आर्थिक विषमता को मोटा-पतला के माध्यम से कुशलता से व्यक्त किया गया है।

=> भाषा-हिन्दुस्तानी

=> संवाद शैली

=> जयशंकर प्रसाद स्कन्दगुप्त में "अन्याय सर्वत्र है ..." के माध्यम से यही विचार व्यक्त करते हैं।

अच्छा

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ख) नारी के प्रति अनुराग से, उसके आश्रय की कामना से ही पुरुष उसे अधीन रख कर उसे आत्म-निर्भर नहीं रहने देता। नारी प्रकृति के विधान से नहीं, समाज के विधान से भोग्य है। प्रकृति में और समाज में भी स्त्री तथा पुरुष अन्योन्याश्रय हैं।

संदर्भ एवं प्रसंग

प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक प्रगतिशील धारा के उपन्यासकार यशपाल द्वारा लिखित उपन्यास 'दिव्या' से ली गई हैं।

इन पंक्तियों में चार्वाकी धारा का पोषक मारिश। दिव्या को स्त्री-पुरुष की परस्पर निर्भरता को समझा रहा है।

व्याख्या =)

मारिश कहता है कि पुरुष एवं स्त्री परस्पर निर्भर हैं। परन्तु पुरुष का स्त्री के प्रति प्रेम ही सदैव उसे स्त्री को अपने अधीन रखने को प्रेरित करता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

स्त्री एवं पुरुष बराबर हैं परन्तु स्त्री की अधीनता का विधान समाज द्वारा रच दिया गया है यह प्राकृतिक नहीं है।

रचनात्मक सौन्दर्य

=> यशपाल की समतावादी नारी दृष्टि प्रकट हुई है।

=> नारी पर समाज द्वारा आरोपित बंधनों को दर्शाया गया है।

=> भाषा तद्भव एवं तत्सम का मिश्रण है।

=> संवाद शैली

=> विराम चिह्नों का कुशल प्रयोग हुआ है।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) अहंकारमूलक आत्मवाद का खण्डन करके गौतम ने विश्वात्मवाद को नष्ट नहीं किया। यदि वैसा करते तो इतनी करुणा की क्या आवश्यकता थी? उपनिषदों के नेति-नेति से ही गौतम का अनात्मवाद पूर्ण है। यह प्राचीन महर्षियों का कथित सिद्धांत, मध्यमा प्रतिपदा के नाम से, संसार में प्रचारित हुआ। व्यक्तिरूप में आत्मा के सदृश कुछ नहीं है। वह एक सुधार था, उसके लिये रक्तपात क्यों?

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ एवं प्रसंग: -

प्रस्तुत पंक्तियाँ छायावाद के स्तम्भ जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित नाटक स्कन्दगुप्त से ली गई हैं।

इन पंक्तियों में ब्राह्मण एवं बौद्धों के मध्य संघर्ष पर धातुसेन समन्वय का प्रयत्न कर रहा है।

व्याख्या =>
धातुसेन समन्वय का प्रयास करते हुए कहता है कि बुद्ध द्वारा वस्तुतः वैदिक धर्म को प्रश्रित ही किया गया है।

वह उदाहरण देते हुए नेति-नेति की

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

तुलना अनात्मवाद से करता है। इसी प्रकार बुद्ध के मध्यम मार्ग को ऋषियों के प्राचीन सिद्धान्तों के तुल्य स्थापित करता है।

रचनात्मक सौन्दर्य

=> प्रसाद की समन्वय चेतना का स्पष्ट प्रमाण ये पंक्तियाँ हैं।

=> प्रसाद के दर्शन के गंभीर अध्ययन का प्रभाव दिखता है।

=> भाषा तत्सम युक्त किन्तु प्रवाह पूर्ण है।

=> संवाद शैली का प्रयोग

=> विराम चिह्नों का कुशल उपयोग है।

साम्प्रदायिकता का प्रश्न उठाया गया है।

5½/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) आज तक के वे भीतरी उबाल और बाहरी दबाव के बीच टुकड़े-टुकड़े होकर हमेशा घुटने ही टेकते आये हैं। हर बार दिनेश को लड़ाई के मैदान में ले तो जरूर गए हैं, पर जैसे ही गोलियाँ चली हैं, उसे वहीं छोड़कर भाग आये हैं- अकेला, निहत्था। वह गोलियों की बौछार से लहूलुहान होता रहा है और ये खुद एक असह्य अपराध बोध से। नहीं, और नहीं; अब तो वे चाहें तो भी शायद ऐसा नहीं कर सकते।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

संदर्भ एवं प्रसंग :

प्रस्तुत पंक्तियाँ नवलेखन के दौर की प्रसिद्ध लेखिका मन्नू भण्डारी लिखित चर्चित राजनीतिक उपन्यास 'महाभोज' से ली गई हैं।

इन पंक्तियों में एस.पी. सक्सेना द्वारा बिन्दा का बयान लेने के बाद अपनी द्वन्दात्मक मनःस्थिति के बारे में सोचा जा रहा है।

व्याख्या :-

अपने मन की द्वन्द की अवस्था में एस.पी. सक्सेना सोचते हैं कि आज तक वे अपने आंतरिक साहस को व्यक्त

Copyright – Drishti The Vision Foundation

नहीं कर सके हैं।

उनका मन बार-बार उन्हें यह बोध कराता है कि हर बार वे अपने आदर्शों से समझौता करने को मजबूर हो गये।

स्वरूपात्मक सौन्दर्य

=> लेखिका द्वारा व्यक्तित्व के अन्तर्द्वन्द का सुन्दर चित्रण किया गया है।

=> वस्तुतः 'चित्र' यहाँ एक प्रतीक है जिसके माध्यम से मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी का अन्तर्द्वन्द व्यक्त हुआ है।

=> भाषा तद्भवयुक्त, संवाद छोटे वाक्यों से पूर्ण एवं प्रभाव युक्त है।

=> व्यक्तित्वान्तरण की पूर्वपीठिका के रूप में यह पंक्तियाँ उपन्यास में अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) पंडित ने रस्सी निकाली। उसका फंदा बनाकर मुरदे के पैर में डाला और फंदे को खींचकर कस दिया। अभी कुछ-कुछ धुँधला-सा था। पंडित जी ने रस्सी पकड़कर लाश को घसीटना शुरू किया और गाँव के बाहर घसीट ले गए। वहाँ से आकर तुरंत स्नान किया, दुर्गापाठ पढ़ा और घर में गंगाजल छिड़का।

संदर्भ एवं प्रसंग

प्रस्तुत पंक्तियाँ मुंशी प्रेमचन्द द्वारा रचित दलित चेतना से युक्त कहानी सद्गति से ली गई हैं।

इन पंक्तियों में पण्डित घासीराम द्वारा दुःखी के मृत शरीर के साथ किये गये व्यवहार को प्रकट किया गया है।

व्याख्या =>

इन पंक्तियों में प्रेमचन्द ने पण्डित घासीराम द्वारा मृत दुःखी को गाँव के बाहर घसीट कर ले जाने का मार्मिक वर्णन किया है।

इसके बाद पण्डित जी द्वारा दुर्गापाठ

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के माध्यम से व्यंग्य भी किया है।

रचनात्मक सौन्दर्य :-

=) इन पंक्तियों में दलितों पर हजारों वर्षों से हो रहे अत्याचारों की रचनात्मक अभिव्यक्ति की गई है।

=) ग्रामीण जीवन में जाति प्रथा की गहरी जड़ों को उभारा गया है।

=) भाषा - हिंदुस्तानी है

=) संवाद शैली का प्रयोग

=) प्रासंगिकता =)

आज भी भारत वर्ष में सवर्ण जातियों द्वारा दलितों पर विभिन्न अत्याचार किये जाते हैं। ये पंक्तियाँ इस दृष्टि से परिवर्तन की आवश्यकता को व्यक्त करती हैं।

अच्छा

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation